Faizane Imam Moosa Kazim (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 283
Weekly Booklet : 283

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या के
सातवें पीरो मुर्शिद का तज़्किरा बनाम

फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़्हात 25

- बा कमाल नौ जवान 02
- जैसा लक़ब वैसी ज़ाते मुबारक 08
- क़बूलिय्यते दुआ का आज़्माया हुवा मक़ाम 14
- वालिदे मोहतरम की नसीहतें 19

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम**

सिने त़बाअ़त : जुमादिल आख़िर **1444** हि., जनवरी **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़्हात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने इमाम मूसा काज़िम"** पढ़ या सुन ले उसे और उस की औलाद को अपने प्यारे और सब से आख़िरी नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आल व अस्ह़ाब की सच्ची मह़ब्बत व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हर काम से पहले दुरूद शरीफ़

शैख़ यूसुफ़ बिन उ़मर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि जब कोई शख़्स किताब लिखे तो **अल्लाह** पाक के नामे पाक या'नी बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात पर दुरूदे पाक लिखे। करोड़ों शाफ़िइय्यों के इमाम, ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं पसन्द करता हूं कि इन्सान अपने हर काम के शुरूअ़ में **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना (या'नी ता'रीफ़ो तौसीफ़) बयान करे और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़े। (مطالع المسرات، ص7، 11)

नबी का नाम है हर जा ख़ुदा के नाम के बा'द कहीं दुरूद से पहले कहीं सलाम के बा'द

(फ़र्श पर अ़र्श, स. 62)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बा कमाल नौ जवान

ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज के लिये रवाना हुवा तो हमारा क़ाफ़िला "मक़ामे क़ादसिय्या" पर ठहरा। वहां और भी बहुत से आ़ज़िमीने ह़ज थे, बड़ा ख़ूब सूरत मन्ज़र था, मैं उन्हें देख देख कर ख़ुश हो रहा था कि येह ख़ुश क़िस्मत लोग सफ़र वग़ैरा की तक्लीफ़ें बरदाश्त कर के अपने पाक परवर्दगार की रिज़ा की ख़ातिर ह़ज करने जा रहे हैं। मैं ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! येह तेरे बन्दों का वफ़्द है, तू इन्हें नाकाम न लौटाना। फिर मेरी नज़र एक नौ जवान पर पड़ी जिस के गन्दुमी रंग में ऐसी चमक दमक थी कि नज़रें उस के चेहरे से हटती ही न थीं। उस ने ऊन का लिबास और सर पर इ़मामा शरीफ़ सजाया हुवा था। वोह लोगों से अलग थलग बैठा हुवा था। मेरे दिल में वस्वसा आया कि येह अपने आप को सूफ़ी ज़ाहिर करना चाहता है ताकि लोग इस की ता'ज़ीम करें, मैं ने दिल में कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ज़रूर इस की निगरानी करूंगा। फिर जैसे ही मैं उस के क़रीब पहुंचा, उस ने मेरी त़रफ़ देखा और मेरा नाम ले कर पारह 26 **सुरतुल ह़ुजुरात** की आयत नम्बर 12 की तिलावत की : ﴿اِجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ﴾ (پ26، الحجرات:12) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।"

इतना कहने के बा'द वोह मुझे वहीं छोड़ कर रुख़्सत हो गया, मैं ने दिल में कहा : येह तो बड़ा अ़जीब मुआ़मला है कि इस नौ जवान ने मेरे दिल की बात जान ली और मुझे मेरा नाम ले कर पुकारा ह़ालां कि

मेरी कभी इस से मुलाक़ात नहीं हुई। येह ज़रूर **अल्लाह** पाक का मक़्बूल बन्दा है, मैं ने ख़्वाह म ख़्वाह इस के बारे में बद गुमानी की, मैं ज़रूर इस नौ जवान से मुलाक़ात कर के मा'ज़िरत करूंगा। मैं जल्दी से उस नौ जवान के पीछे गया लेकिन काफ़ी कोशिश के बा'द भी उसे न ढूंड सका। फिर हमारे क़ाफ़िले ने मक़ामे "वाक़सा" में क़ियाम किया, वहां मैं ने उस नौ जवान को ह़ालते नमाज़ में पाया। उस का सारा वुजूद कांप रहा था और आंखों से आंसू बह रहे थे। मैं उसे पहचान कर उस के क़रीब जा कर बैठ गया ताकि उस से मा'ज़िरत करूं, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ शक़ीक़! पारह 16 **सूरए त़ाहा** की आयत नम्बर 82 पढ़ो : ﴿وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى﴾ (پ16، طٰہٰ:82) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।"

इतना कहने के बा'द वोह नौ जवान फिर वहां से रुख़्सत हो गया। मैं ने कहा : येह नौ जवान ज़रूर अब्दालों में से है। इस ने दो मरतबा मेरे दिल की बातों को जान लिया और मुझे मेरे नाम के साथ बुलाया है। मैं उस से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हो चुका था। फिर जब हमारा क़ाफ़िला मक़ामे "रबाल" में रुका तो वोही नौ जवान मुझे एक कूंएं के पास नज़र आया। उस के हाथ में चमड़े का एक थेला था और वोह कूंएं से पानी निकालना चाहता था। अचानक उस के हाथ से वोह थेला छूट कर कूंएं में गिर गया, उस नौ जवान ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक! जब मुझे प्यास सताती है तो तू ही मेरी प्यास बुझाता

है, जब मुझे भूक लगती है तो तू ही मुझे खाना अ़ता फ़रमाता है, मेरी उम्मीद गाह बस तू ही तू है, ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! मेरे पास इस थेले के सिवा और कोई चीज़ नहीं, मुझे मेरा थेला वापस लौटा दे ।

ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम ! अभी उस नौ जवान की दुआ़ ख़त्म न हुई थी कि कूंएं का पानी ऊपर आना शुरूअ़ हो गया । उस नौ जवान ने अपना हाथ बढ़ा कर थेला निकाला और उस में पानी भर लिया फिर कूंएं का पानी वापस नीचे चला गया । नौ जवान ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने लगा । नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर वोह एक रेत के टीले की त़रफ़ गया । मैं भी चुपके से उस के पीछे हो लिया । उस ने रेत उठाई और थेले में डालने लगा, फिर थेले को हिला कर उस में मौजूद रेत मिले पानी को पीने लगा । मैं ने उस के क़रीब जा कर सलाम अ़र्ज़ किया । उस ने जवाब दिया । मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ नेक नौ जवान ! **अल्लाह** पाक ने जो रिज़्क़ तुझे अ़ता फ़रमाया है उस में से कुछ मुझे भी अ़ता कर । येह सुन कर उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** पाक अपने बन्दों पर हर वक़्त फ़ज़्लो करम फ़रमाता रहता है, कोई घड़ी ऐसी नहीं गुज़रती जिस में वोह पाक परवर्दगार अपने बन्दों पर ने'मतें नाज़िल न फ़रमाता हो, ऐ शक़ीक़ ! अपने रब से हमेशा अच्छा गुमान रखना चाहिये । इतना कहने के बा'द उस नौ जवान ने वोह चमड़े का थेला मेरी त़रफ़ बढ़ाया, जैसे ही मैं ने उस में से पिया तो वोह शकर और ख़ालिस सत्तू मिला हुवा बेहतरीन पानी था । ऐसा ख़ुश ज़ाएक़ा पानी मैं ने आज तक न पिया था, मैं ने ख़ूब पेट भर कर पानी पिया । मैं ह़ैरान था कि अभी मेरे सामने इस थेले में रेत डाली गई है लेकिन इस नौ जवान की करामत से वोह रेत सत्तू

और शकर में बदल गई है, उस बा बरकत शरबत को पीने के कई दिन बा'द तक मुझे पानी और खाने की त़लब न हुई।

फिर हमारा क़ाफ़िला मक्कए पाक पहुंचा तो वहां मैं ने उसी नौ जवान को एक कोने में आधी रात को नमाज़ की ह़ालत में देखा। वोह बड़े ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (या'नी दिल और जिस्म की आ़जिज़ी) से नमाज़ पढ़ रहा था और उस की आंखों से आंसू जारी थे। उस ने इसी त़रह़ नमाज़ की ह़ालत में सारी रात गुज़ार दी, जब फ़ज्र का वक़्त हुवा तो वोह तब भी अपने मुसल्ले पर बैठा रहा और **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करता रहा, फिर नमाज़े फ़ज्र पढ़ने के बा'द उस ने त़वाफ़ किया और एक त़रफ़ चल दिया, मैं भी उस के पीछे चल पड़ा। इस बार मेरी नज़रों में बड़ा ह़ैरान कुन मन्ज़र था क्यूं कि उस के सामने कई लोग हाथ बांधे खड़े थे और लोग जूक़ दर जूक़ सलाम के लिये ह़ाज़िर हो रहे थे। मैं ने एक शख़्स से पूछा : येह अ़ज़ीम नौ जवान कौन है ? उस ने जवाब दिया : येह ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जा'फ़रे सादिक़ बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हैं। मैं ने दिल में कहा : इतनी करामात का ज़ाहिर होना इस सय्यिद ज़ादे की ही शान के लाइक़ है, येही वोह हस्तियां हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक इतनी करामात से नवाज़ता है।

(उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम), 1/238 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

विलादते बा सआ़दत और तआ़रुफ़

गुलशने अहले बैते नुबुव्वत के महक्ते फूल ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 128 हि. बरोज़ मंगल तुलूए़ फ़ज्र के वक़्त मक्कए पाक और मदीनए मुनव्वरह के दरमियान वाक़ेअ़ अ़लाक़ा अब्वा शरीफ़ (जहां प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का मज़ार शरीफ़ है) में पैदा हुए। आप का मुबारक नाम मूसा, कुन्यत अबुल ह़सन और अबू इब्राहीम और अल्क़ाबात साबिर, सालेह़, अमीन जब कि सब से मश्हूर लक़ब "काज़िम" है। बहुत ज़ियादा मुआ़फ़ी व दर गुज़र करने के सबब आप का लक़ब काज़िम (या'नी ग़ुस्से को पी जाने वाला) हुवा। (وفیات الاعیان، 4/505۔ مسالک السالکین، 1/224)

इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

शाने ह़िल्मन काने इ़ल्मन जाने सल्मन अस्सलाम मूसए काज़िम जहां नाज़िम मुरा इमदाद कुन

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 328)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : **ह़िल्म :** बुर्दबारी। **कान :** ख़ज़ाना।

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ मेरे आक़ा इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ! आप पर सलाम हो कि आप ह़िल्मो बुर्दबारी की शान, मख़्ज़ने इ़ल्म (या'नी इ़ल्म के ख़ज़ाने) और सलामती की जान हैं। ऐ इमाम मूसा काज़िम ! आप दुन्या के निज़ाम को चलाने वाले हैं, मेरी मदद फ़रमाइये।

अ़रबी शजरा

अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक त़वील अ़रबी शजरा शरीफ़, ब सीग़ए

दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى السَّيِّدِ الْاِمَامِ مُوْسٰى بْنِ جَعْفَرِنِ الْكَاظِمِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और सरदार व मौला मूसा काज़िम बिन जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا पर दुरूदो सलाम भेज और इन पर बरकत नाज़िल फ़रमा।

(तारीख़ व शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 108)

वालिदैने करीमैन

इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अहले बैते अत़्हार के चश्मो चराग़ और अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साह़िब ज़ादे और सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के सातवें पीरो मुर्शिद हैं। आप की वालिदए मोह़तरमा का नाम ह़मीदा बरबरिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا था। ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आप के बारे में फ़रमाते थे कि मेरे तमाम बेटों में मूसा काज़िम बेहतरीन बेटे हैं और येह **अल्लाह** पाक के मोतियों में से एक मोती हैं। (مسالک السالکین، 1/225)

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को रोज़ाना पढ़ने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का जो शजरा शरीफ़ अ़त़ा फ़रमाया है उस में ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम, आप के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा और आप

के वालिदे मोहतरम ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के वसीले से यूं दुआ़ की गई है :

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वासिते

अल्फ़ाज़ मआ़नी : सिद्क़ : सच । **सादिक़ :** सच्चा । **तसद्दुक़ :** सदक़ा । **सादिकुल इस्लाम :** सच्चा मुसल्मान ।

दुआ़इया शे'र का मफ़्हूम : या अल्लाह पाक ! तुझे ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सच्चाई का वासिता ! मुझे ईमान की सलामती अ़ता फ़रमा दे और ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम और इन के साहिब ज़ादे ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े बिग़ैर ग़ज़ब फ़रमाए मुझ से राज़ी हो जा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जैसा लक़ब वैसी ज़ाते मुबारक

शहज़ादए आ़ली वक़ार, ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुबारक रातें इ़बादत में और दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़रते, बहुत ज़ियादा इ़बादत करने की वज्ह से आप को "अ़ब्दे सालेह़" या'नी नेक बन्दा के लक़ब से याद किया जाता था । ह़िल्मो बुर्दबारी (या'नी क़ुव्वते बरदाश्त) का येह आ़लम था कि आप का लक़ब "काज़िम" (या'नी ग़ुस्सा पीने वाला) आप की पहचान बन गया है । आ़जिज़ी व इन्किसारी की येह कैफ़िय्यत थी कि जब कोई आप के सामने आता तो उस के सलाम अ़र्ज़ करने से पहले आप ख़ुद सलाम में पहल फ़रमा देते । अगर मा'लूम होता कि कोई आप को तक्लीफ़ पहुंचाने में लगा हुवा है तो आप उस की भी ज़रूरत पूरी फ़रमाते ।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 156 ब तग़य्युर)

ऐ आशिक़ाने इमाम मूसा काज़िम ! हमारे इमाम की आ़जिज़ी व सादगी पर लाखों सलाम हों, काश ! हम भी इमामे काज़िम के सदक़े अपने ग़ुस्से को पी जाने वाले बन जाएं, बारहा ग़ुस्सा पी जाना बहुत सारे मसाइल का ह़ल और लड़ाइयों को ख़त्म करने का सबब बन जाता है। घर और कारोबार के झगड़े मोल ले कर ग़म के आंसू पीने से ग़ुस्सा पीना कई दरजे बेहतर है, ग़ुस्से के दो घूंट पी लेना त़वील ज़िन्दगी ग़ैज़ो ग़ज़ब में जलते रहने से बेहतर है। ग़ुस्सा पीने का कितना सवाब है, आइये ! आप की तरग़ीब के लिये चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेश करता हूं :

"जन्नत" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग़ुस्सा पीने के बारे में तीन अह़ादीस

﴾1﴿ **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने मे'राज की रात जन्नत में ऊंचे मह़ल्लात देखे तो पूछा : ऐ जिब्रील ! येह किस के लिये हैं ? अ़र्ज़ की : उन के लिये हैं जो ग़ुस्सा पी जाते हैं और लोगों से दर गुज़र करते हैं। (مسند الفردوس، 1/405، حدیث:3011)

﴾2﴿ बन्दे के ग़ुस्सा पी लेने से बढ़ कर कोई घूंट मेरे नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा नहीं और जो **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये ग़ुस्सा पी ले **अल्लाह** पाक उस के दिल को ईमान से भर देगा। (مسند امام احمد، 1/700، حدیث:3017)

﴾3﴿ आदमी का कोई घूंट पीना उस ग़ुस्से के पीने से अफ़्ज़ल नहीं जो वोह रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने के लिये पीता है। (ابن ماجہ، 4/463، حدیث:4189)

सुन लो नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को नफ़्स के वासित़े ग़ुस्सा जो किया करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 294)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत पर अ़मल करते हुए हमें भी चाहिये कि घर, ऑफ़िस आते जाते, राह चलते अपने मुसल्मान भाइयों को सलाम में पहल करें, सलाम में पहल करना ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के प्यारे प्यारे नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत है । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "550 सुन्नतें और आदाब" सफ़ह़ा 31 पर लिखते हैं : सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** करीम का मुक़र्रब (या'नी नज़्दीकी पाने वाला बन्दा) है । (ابوداود، 4/449، حدیث:5197) सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी (या'नी आज़ाद) है, जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा, प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है । (شعب الایمان، 6/433، حدیث:8786) "कीमियाए सआ़दत" में है : सलाम (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं । (550 सुन्नतें और आदाब, स. 31, 394/1، کیمیائے سعادت)

मुत़ीअ़ अपना मुझ को बना या इलाही सदा सुन्नतों पर चला या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सख़ावत व करम की अ़त़ा

मेरे मुर्शिद, ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के जूदो सख़ा का येह आ़लम था कि मदीनए पाक में ग़रीबों को तलाश करते और हर एक को रात के वक़्त उस की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ रक़म इस त़रह़ पहुंचाते कि उसे ख़बर तक न होती कि येह रक़म कौन दे कर गया है ।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 156)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की क्या शान है, नेकी कर के उसे छुपाना मुख़्लिसीन ही का हिस्सा है क्यूं कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे मख़्लूक़ से बदले या शुक्रिय्या की ख़्वाहिश क्या तवक़्क़ोअ़ भी नहीं रखते, जभी तो ग़रीबों की इस त़रह़ इमदाद फ़रमाते कि उन्हें भी अपने मोह़सिन (या'नी एह़सान करने वाले) का पता न चलता। **अल्लाह** करीम ! अपने मुख़्लिसीन के सदक़े हमें भी इख़्लास की दौलत से नवाज़े। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हमें हुब्बे जाह और वाह वा की ख़्वाहिश ने कहीं का नहीं छोड़ा, मस्जिद में पांच सो, हज़ार रुपै देने वाले की भी ख़्वाहिश होती है कि हमारा नाम ले कर दुआ़ की जाए। मस्जिद, मद्रसे का ता'मीराती काम करवा दिया या कोई सामान ले कर दे दिया तो तमन्ना होती है कि नमाज़ियों को हमारे कारनामे का पता चले। यक़ीनन हरगिज़ इन बातों की वज्ह से किसी पर रियाकारी या हुब्बे जाह का हुक्म नहीं लगाया जा सकता लेकिन ऐसे करने वाले को ख़ुद अपनी निय्यत पर ज़रूर ग़ौर कर लेना चाहिये कि मस्जिद, मद्रसे में गीज़र ले कर देने पर लोगों के सामने नाम ले कर दुआ़ करवाने की ख़्वाहिश दिल में क्यूं चुटकियां ले रही है या मस्जिद में सख़्त गरमी के मौसिम में "ए.सी" लगवाने पर दिल में क्यूं हलचल मच रही है कि सब के सामने मेरा ए'लान हो कि येह मैं ने ले कर दिया है। ऐसे ही मसाजिद व मदारिस में अ़त़िय्या की गई चीज़ों पर "बराए ईसाले सवाब" अपना नाम लिखवाते वक़्त सो मरतबा दिल पर ग़ौर कीजिये। ख़ुदा न ख़्वास्ता निय्यत में फ़साद (या'नी ख़राबी) हो तो फ़ौरन तौबा कीजिये और अपने अ़मल में इख़्लास पैदा करने की कोशिश कीजिये। ह़दीसे पाक में है :

''बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मरतबा पनाह मांगता है, **अल्लाह** पाक ने येह वादी उम्मते मुहम्मदिय्यह के उन रियाकारों के लिये तय्यार की है जो ग़ैरुल्लाह के लिये सदक़ा करने वाले होंगे।'' (معجم کبیر، 12/136، حدیث:12803)

मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना से मत्बूआ़ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब ''एह्याउल उ़लूम'' जिल्द 5 सफ़ह़ा 255 से इख़्लास के बाब का मुत़ालआ़ कीजिये। हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 72)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ग़रीब की मदद (वाक़िआ़)

ईसा बिन मुह़म्मद मुग़ीस क़रशी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बयान किया जब कि उन की उ़म्र 90 साल हो चुकी थी। फ़रमाते हैं कि मैं ने जुवानिया बस्ती में उम्मे इ़ज़ाम नामी कूंएं के पास तरबूज़, ककड़ी और कद्दू की फ़स्ल काश्त की, जब खेती तय्यार हो गई और कटाई का वक़्त क़रीब आया तो टिड्डियों ने ह़म्ला कर के सारी फ़स्ल तबाहो बरबाद कर दी, मैं खेत और दो ऊंटों की क़ीमत के सिल्सिले में 120 दीनार का मक़्रूज़ हो चुका था। मैं इसी परेशानी के आ़लम में बैठा था कि ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए और सलाम करने के बा'द पूछा : तुम्हारा क्या ह़ाल है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : मैं टूटे हुए फल की त़रह़ रह गया हूं, टिड्डियों ने ह़म्ला कर के मेरी सारी फ़स्ल खा ली है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ने फ़रमाया : तुम पर कितना क़र्ज़ है ? अ़र्ज़ किया : दो ऊंटों की क़ीमत समेत 120 दीनार का मक़्रूज़ हूं। आप ने (अपने साथी से) फ़रमाया : ऐ अ़रफ़ा ! अबू मुग़ीस को 150 दीनार तोल दो, (और फ़रमाया :) हम तुम्हें (खेत के इ़लावा) 30 दीनार और दो ऊंटों का इज़ाफ़ी मुनाफ़अ़ देते हैं। मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ मुबारक ! (बरकत वाले) अन्दर तशरीफ़ लाएं ! और इस में मेरे लिये (ख़ैरो बरकत की) दुआ़ कर दें, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अन्दर तशरीफ़ लाए और दुआ़ की, फिर मुझे ह़दीसे पाक सुनाई कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "मुसीबतों से बची हुई चीज़ों को संभाल रखो।"

फिर मैं ने ऊंटों को उसी खेत में लगाए रखा और खेती को सैराब किया। **अल्लाह** पाक ने उस खेती में ऐसी बरकतें अ़ता फ़रमाईं कि काश्त में ख़ूब इज़ाफ़ा हुवा और मैं ने उस में से कुछ ह़िस्सा बेच कर 10 हज़ार दीनार कमा लिये। (تاریخ بغداد، 13/30)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी की गाड़ी मसाइल के पहियों ही पर चलती है, समझदार वोह है जो ज़िन्दगी के मुश्किल ह़ालात से मुक़ाबला करने की कोशिश करता रहे, मसाइले ज़ीस्त को कोसने से कुछ नहीं होगा, **अल्लाह** पाक की बारगाह में सर को झुकाइये कि क़ल्बे मुज़्त़रिब (या'नी बे क़रार दिल) के साथ दुआ़ करने से मसाइल ह़ल हो सकते हैं। घन्टों मुल्की, समाजी और मुआ़शरती पहलूओं पर फ़क़त बह़सो मुबाह़सा (Debate) करने के बजाए आगे बढ़ कर किसी ग़रीब मुसल्मान का हाथ थामें और अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ उस की माली मदद करें। दूसरों के मसाइल ह़ल करें, आप के मसाइल भी ह़ल होते चले

जाएंगे। **अल्लाह** करीम हमें इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मुबारक सीरत पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुरादें पूरी होने का दरवाज़ा

मेरे आक़ा व मौला, ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुस्तजाबुद्दा'वात तो थे ही (या'नी आप की दुआ़एं क़बूल होती थीं बल्कि) जो लोग आप के वसीले से दुआ़ करते या आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से दुआ़ करवाते वोह भी अपनी मुरादें पा लेते, उन की ख़ाली झोलियां गौहरे मुराद (या'नी दिली मुरादों) से भर जातीं, इसी वज्ह से इ़राक़ के रहने वाले आप को बाबुल ह़वाइज (या'नी ज़रूरिय्यात पूरी होने का दरवाज़ा) कहते थे।

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 155, 674)(صواعق المحرقہ، اردو، ص)

क़बूलिय्यते दुआ़ का आज़्माया हुवा मक़ाम

करोड़ों शाफ़िइ़य्यों के इमाम, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़िई़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर दुआ़ करना क़बूलिय्यत में मुजर्रब (या'नी आज़्माया हुवा) है। (لمعات التنقیح، 215/4)

फ़िक़्हे ह़म्बली के बहुत बड़े इमाम ह़ज़रते इमाम ख़ल्लाल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे जब भी कोई अहम काम पेश आता है, मैं ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम बिन जा'फ़रे सादिक़ (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا) के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर आप का वसीला पेश करता हूं। **अल्लाह** पाक मेरी मुश्किल आसान कर के मेरी मुराद अ़ता फ़रमा देता है। (تاریخ بغداد، 133/1)

वालिदे आ'ला ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब ''अह़सनुल विआ़ लि आदाबिद्दुआ़'' का उर्दू नाम ''फ़ज़ाइले दुआ़'' है, आप ने इस किताब के बाब अम्किनए इजाबत या'नी ''वोह मुबारक मक़ामात जिन पर दुआ़एं क़बूल होती हैं'' में छत्तीसवां (36th) मक़ाम ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मज़ारे मुबारक लिखा है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 137)

भिकारी बन के इस दर पर जो मांगोगे वोह पाओगे कि अरबाबे नज़र बाबे इजाबत इस को कहते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सह़ाबा व अहले बैत की फ़ज़ीलत

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! दोनों जहां में नजात पाने के लिये सह़ाबा व अहले बैत से मह़ब्बतो उल्फ़त होना ज़रूरी है, مَعَاذَالله इन में से किसी के बारे में भी दिल में कमज़ोर बात आई तो बरबादिये ईमान का सबब हो सकता है, इन दोनों ह़ज़रात की मह़ब्बत ही जन्नत में ले कर जाएगी। अह़ादीसे मुबारका में जहां ''اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ، فَبِاَيِّهِمْ اِقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ या'नी मेरे सह़ाबा सितारों की मानिन्द है, इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे।'' (مشکوٰۃ المصابیح، 2/414، حدیث:6018) फ़रमाया गया, वहीं ह़दीसे पाक में येह भी है : ''مَثَلُ اَهْلِ بَيْتِيْ فِيْكُمْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مِنْ قَوْمِهٖ مَنْ رَكِبَهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا غَرَقَ या'नी तुम में मेरे अहले बैत की मिसाल कश्तिये नूह़ की त़रह़ है, जो इस में सुवार हुवा, वोह नजात पा गया और जो पीछे रहा हलाक हो गया।'' (مستدرک، 4/132، حدیث:4774)

सह़ाबा हैं सब मिस्ले अन्जुम दरख़्शां सफ़ीना है उम्मत का इतरत नबी की

(क़बालए बख़्शिश, स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

भाई की शान

ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के एक भाई का नाम मुह़म्मद बिन जा'फ़र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه था, येह भी बड़ी शान व मर्तबे के मालिक थे। बहादुर, अ़क़्ल मन्द और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाने वाले थे। आप सौमे दावूदी या'नी एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते थे। आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में जुरजान के मक़ाम पर हुवा। (سیر اعلام النبلاء، 8/426)

इबादतो रियाज़त

रिवायत में है कि ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हमेशा सारी रात नफ़्ल नमाज़ पढ़ते यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो जाता। आप येह दुआ़ बहुत ज़ियादा मांगा करते थे : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابْ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से मौत के वक़्त आसानी और ह़िसाब के वक़्त मुआ़फ़ी का सुवाल करता हूं। एक मरतबा आप मस्जिदे नबवी शरीफ़ में दाख़िल हुए और शुरूअ़ रात में सज्दा किया तो सुना गया कि आप सज्दे की ह़ालत में बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर रहे हैं : ''عَظُمَ الذَّنْبُ عِنْدِیْ، فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ या'नी मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हो गए लिहाज़ा ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरी त़रफ़ से मुआ़फ़ी भी उतनी ज़ियादा होनी चाहिये।'' आप येह कहते रहे यहां तक कि सुब्ह़ हो गई। (تاریخ بغداد، 13/29۔ سیر اعلام النبلاء، 6/448)

फ़ज़्ल कर रह़म कर तू अ़त़ा कर और मुआ़फ़ ऐ ख़ुदा हर ख़त़ा कर
वासित़ा पन्जतन पाक का है या ख़ुदा ! तुझ से मेरी दुआ़ है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क़ैद में भी इबादत

ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को जब مَعَاذَاللهِ क़ैद में रखा गया तो आप के दिन रात के मा'मूलाते मुबारका देखने वाली कनीज़ का बयान है कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नमाज़े इ़शा अदा फ़रमा लेने के बा'द **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना (या'नी ता'रीफ़ो तौसीफ़ बयान करने) में मसरूफ़ रहते और फिर दुआ़ मांगते, रात का काफ़ी ह़िस्सा गुज़र जाने के बा'द फिर खड़े होते और सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ते रहते, नमाज़े फ़ज्र के बा'द ज़िक्रुल्लाह करते रहते यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो जाता, फिर ज़ह़ूवए कुब्रा तक मुराक़बा फ़रमाते, इस के बा'द मिस्वाक वग़ैरा कर के खाना खाते, फिर कुछ देर आराम फ़रमा कर वुज़ू करते और नफ़्ल नमाज़ पढ़ते रहते ह़त्ता कि नमाज़े अ़स्र पढ़ लेते, फिर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के ज़िक्रुल्लाह करते रहते यहां तक कि मग़रिब की नमाज़ अदा फ़रमाते। नीज़ मग़रिब और इ़शा के दरमियानी वक़्त में भी नफ़्ल नमाज़ अदा फ़रमाते रहते। कनीज़ कहती हैं : वोह लोग बड़े बद नसीब हैं जो ऐसे नेक शख़्स को परेशान करते हैं। (تاریخ بغداد، 13/33)

अल्लाह पाक पर तवक्कुल की बेहतरीन मिसाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दीगर ख़ुसूसिय्यात के साथ ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तवक्कुल अ़लल्लाह "या'नी **अल्लाह** पाक पर भरोसे" के बहुत बुलन्द दरजे पर फ़ाइज़ थे, ज़ुल्मन क़ैद में रखे जाने के सबब अगर्चे किसी से रिहाई का फ़रमाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ न था मगर आप अपने मा'मूलाते मुबारका में ख़ुदाए पाक के इ़लावा किसी से ज़िक्र करना पसन्द न फ़रमाते।

लिहाज़ा आप ने ख़लीफ़ए वक़्त के नाम ऐसा ख़त लिखा कि जो आप की जुर्अत मन्दी का मुंह बोलता सुबूत है। आप ने लिखा : ऐ ख़लीफ़ा ! जैसे जैसे मेरी आज़्माइश के दिन गुज़र रहे हैं वैसे वैसे तुम्हारे ऐशो राहत के दिन भी कम हो रहे हैं यहां तक कि हम दोनों एक ऐसे दिन (या'नी क़ियामत में) मिलेंगे जब बुरे काम करने वाले नुक़्सान में रहेंगे।

(سیر اعلام النبلاء، 6/450)

ख़्वाब में दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के क़ैदो बन्द के दिनों में एक रात आप को ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! तुम ज़ुल्मन क़ैद में हो, मैं चन्द कलिमात सिखाता हूं, अगर तुम इन को पढ़ो तो तुम आज ही की रात क़ैद से रिहा हो जाओगे, वोह कलिमात येह हैं :

يَاسَامِعَ كُلِّ صَوْتٍ، وَيَاسَابِقَ الْفَوْتِ، وَيَاكَاسِيَ الْعِظَامِ لَحْمًا وَّمُنْشِرَهَا بَعْدَ الْمَوْتِ، اَسْاَلُكَ بِاَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى وَبِاسْمِكَ الْاَعْظَمِ الْاَكْبَرِ الْمَخْزُوْنِ الْمَكْنُوْنِ الَّذِيْ لَمْ يَطَّلِعْ عَلَيْهِ اَحَدٌ مِّنَ الْمَخْلُوْقِيْنَ، يَاحَلِيْمًا ذَا اَنَاةٍ لَا يَقْوٰى عَلٰى اَنَاتِهٖ، يَاذَا الْمَعْرُوْفِ الَّذِيْ لَا يَنْقَطِعُ اَبَداً وَلَا يُحْصٰى عَدَداً، فَرِّجْ عَنِّيْ۔

तरजमा : ऐ हर आवाज़ सुनने वाले ! ऐ हर नक़्स व महरूमी से पाक ! ऐ हड्डियों पर गोश्त चढ़ाने और मौत के बा'द उन (हड्डियों) को जम्अ़ करने वाले ! मैं तुझ से तेरे सब अच्छे नामों और तेरे उस बड़े इस्मे आ'ज़म के वसीले से सुवाल करता हूं, जो छुपा हुवा ख़ज़ाना है जिस की मख़्लूक़ में से

(तेरी अ़ता के बिग़ैर) किसी को ख़बर नहीं, ऐ ह़िल्म वाले ! ह़लीमी फ़रमाने वाले कि ऐसी ह़लीमी की किसी और को ताक़त न हो, ऐ न ख़त्म होने वाली बे शुमार भलाई वाले ! मेरी मुसीबत दूर फ़रमा दे।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जब येह दुआ पढ़ी तो इस की बरकत से आज़ाद हो गए। (وفیات الاعیان، 4/504 ملخصًا)

वालिदे मोह़तरम की सोने से लिखी जाने वाली नसीह़तें

ह़ज़रते हैसम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक शागिर्द ने मुझे बताया कि एक मरतबा मैं आप की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा तो आप के लख़्ते जिगर ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे और आप उन्हें नसीह़तें फ़रमा रहे थे कि ऐ मेरे बेटे ! मेरी नसीह़त क़बूल कर लो और मेरी बातों को याद रखना, अगर इन्हें याद रखोगे तो ज़िन्दगी भी अच्छी गुज़रेगी और मौत भी क़ाबिले रश्क होगी।

ऐ मेरे बेटे ! मालदार वोह है जो **अल्लाह** पाक की तक़्सीम पर राज़ी रहे और जो दूसरे के माल पर नज़र रखे वोह ग़ुर्बत की ह़ालत में ही मरता है। **अल्लाह** पाक की तक़्सीम पर राज़ी न रहने वाला गोया **अल्लाह** पाक को उस के फ़ैसले में मुत्तहम ठहराता है। अपनी ग़लती को छोटा समझने वाला दूसरों की ग़लती को बड़ा और दूसरे की ग़लती को छोटा ख़याल करने वाला अपनी ग़लती को बड़ा समझता है।

ऐ मेरे बेटे ! दूसरे के ऐ़बों से पर्दा हटाने वाले के अपने ऐ़ब ज़ाहिर हो जाते हैं। किसी के लिये गढ़ा खोदने वाला ख़ुद ही उस में जा गिरता है। बे वुक़ूफ़ों की सोह़बत में बैठने वाला ह़क़ीर व ज़लील होता जब कि

उ़लमा की सोह़बत इख़्तियार करने वाला इ़ज़्ज़त पाता है और बुराई के मक़ाम पर जाने वाला मुत्तहम (या'नी बुराई करने के इल्ज़ाम में मुब्तला) होता है। ऐ मेरे बेटे ! लोगों पर ऐ़ब लगाने से बचना वरना लोग तुम पर ऐ़ब लगाएंगे और फ़ुज़ूल बातों से बचना वरना उन की वज्ह से ज़लीलो रुस्वा होगे। ऐ मेरे बेटे ! ह़क़ बात ही कहना ख़्वाह तुम्हारे ह़क़ में हो या ख़िलाफ़ क्यूं कि मज़म्मत का सामना तुम्हें अपने दोस्तों की त़रफ़ से ही करना पड़ेगा। ऐ मेरे बेटे ! क़ुरआने करीम की तिलावत करते रहना, सलाम को आ़म करना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना, रिश्तेदारी तोड़ने वाले से रिश्ता जोड़ना, जो तुम से बात न करे उस से बात करने में पहल करना, जो तुम से मांगे उसे अ़त़ा करना, चुग़ल ख़ोरी से बचना कि येह दिलों में बुग़्ज़ पैदा करती है। लोगों के ऐ़बों के पीछे न पड़ना कि येह चीज़ ख़ुद को (मज़म्मत व तोहमत का) हदफ़ बनाने के क़ाइम मक़ाम है। ऐ मेरे बेटे ! अगर अच्छाई के त़लब गार हो तो उस के मआ़दिन को लाज़िम जानो, बेशक भलाई के मआ़दिन हैं और मआ़दिन की कोई अस्ल (जड़) होती है और अस्ल की शाख़ें होती हैं और शाख़ों के साथ फल होते हैं और फल अपने उसूल के साथ ही अच्छे होते हैं और जड़ उसी वक़्त मज़बूत़ होती है जब ज़मीन अच्छी हो।

ऐ मेरे बेटे ! अगर मुलाक़ात की ख़्वाहिश हो तो नेक लोगों से मिलना, फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार से न मिलना कि फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार पथ्थर की उस चट्टान की त़रह़ हैं जिस से पानी नहीं बहता, ऐसे दरख़्त की त़रह़ हैं जो सर सब्ज़ो शादाब नहीं होता, वोह बन्जर ज़मीन की मिस्ल हैं जिस पर घास नहीं उगती।

ह़ज़रते इमाम अ़ली बिन मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने येह वसिय्यत फ़रमाई और आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हो गया और मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आख़िरी वक़्त तक इस वसिय्यत पर अ़मल करते रहे। (حلیۃ الاولیا، 3/228)

शहादत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आप का 55 साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या बरकातिया, स. 84) 25 रजबुल मुरज्जब 183 हि. को आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मर्तबए शहादत को पहुंचे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मज़ारे पुर अन्वार बग़दादे मुअ़ल्लाह में काज़िमीन शरीफ़ के मक़ाम पर वाक़ेअ़ है।

(تاریخ بغداد، 13/33، तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 163)

अ़ल्लामा ख़त़ीब बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आप का मज़ार शरीफ़ मश्हूरो मा'रूफ़ है, ज़ाइरीन ह़ाज़िरी के लिये आते हैं, वहां सोने चांदी की क़िन्दीलें और कई क़िस्म के क़ालीन व आराइश की चीज़ें हैं।

(وفیات الاعیان، 4/505)

फ़रमाने इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के जा नशीन व ख़लीफ़ा, ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने वालिदे मोह़तरम का मुबारक फ़रमान बयान फ़रमाते हैं कि जब दुन्या किसी इन्सान की त़रफ़ मुतवज्जेह

होती है तो उसे आ़रिज़ी ख़ूबियां देती है और जब किसी से पीठ फेरती है तो उस से उस की अपनी ख़ूबियां ले जाती है। (سیر اعلام النبلاء، 8/249)

मन्क़बते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

इ़श्क़ है जिन का हम पर लाज़िम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम
हम हैं जिन के दर के मुलाज़िम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम
जूदो सख़ा है शान तुम्हारी
अ़फ़्वो करम है काम तुम्हारा
हम भी रहेंगे साइल दाइम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम
चौदह बरस तक जेल में ठहरे
ज़ुल्म को सहते कुछ ना कहते
यूं कहते हैं तुम को काज़िम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम
आले नबी से बुग़्ज़ो अ़दावत
करने वालों पर हो ला'नत
ग़र्क़ हुए हैं तेरे शातिम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम
जिस का कोई काम रुका हो
मुश्किल कैसी सर पे खड़ी हो
आओ उजागर बन के ख़ादिम
मूसा काज़िम मूसा काज़िम

(शाइ़र : मौलाना निसार अ़ली उजागर साहिब)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

हर सहाबिये नबी जन्नती जन्नती

(मुहर्रम शरीफ़ 1442 सि. हि./10-9-2020)

हर सहाबिये नबी ! जन्नती जन्नती
सब सहाबियात भी ! जन्नती जन्नती
चार याराने नबी जन्नती जन्नती
हज़रते सिद्दीक़ भी जन्नती जन्नती
और उमर फ़ारूक़ भी जन्नती जन्नती
उस्माने ग़नी जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली जन्नती जन्नती
हैं हसन हुसैन भी जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी जन्नती जन्नती

इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ का एक मन्ज़र

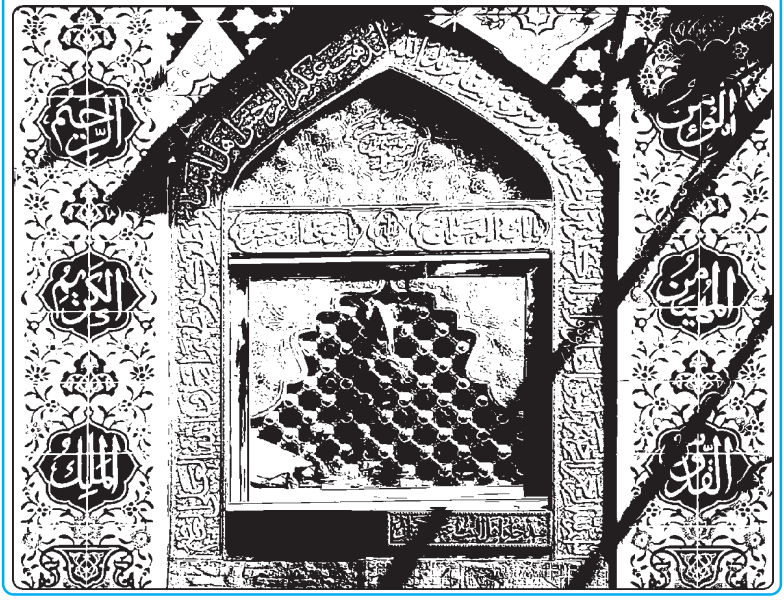

अगले हफ़्ते का रिसाला